



मैं तुझसे हर उस नाम के साथ प्रश्न करता हूँ जो तेरा है, जिसके द्वारा तूने अपना नाम रखा है, या तूने उसे अपनी किसी मखलूक को सिखाया है, या तूने अपनी किसी किताब में उतारा है, या तूने उसे अपने पास परोक्ष के ज्ञान में संरक्षित किया है, कि तू कुरआन को मेरे दिल की बहार, मेरे सीने की रोशनी, मेरे दुःख का निवारण और मेरी चिंता का मोचन बना दे।), तो अल्लाह उसके दुःख और शोक को दूर कर देगा, और उसके बदले में उसको आनंद प्रदान करेगा।” कहा गया : ऐ अल्लाह के रसूल !, क्या हम उन्हें सीख न लें? आपने कहा : “क्यों नहीं, जो कोई उन्हें सुने उसे उन्हें सीखना चाहिए।” अलबानी ने “सहीह अत-तर्गीब व अत-तर्हीब” (1822) में इसे सहीह कहा है।

2- मुस्लिम (हदीस संख्या : 2713) ने अबू हरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि उन्होंने कहा : अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमें आदेश देते थे कि जब हम सोने के लिए लेटें तो कहें : “*اللّٰهُمَّ اِنِّى اَسْئَلُكَ بِرَبِّكَ الَّذِى كَرَّمَ رَجُلًا مِّنْ رِّجَالِكَ لَمَّا كَانَتْ يَدَاكَ مَبْرُورًا لِّمَنْ يَدُورُ اِلَيْهِ*” (ऐ अल्लाह, ऐ आकाशों के रब, धरती के रब और महान अर्श के रब ! ऐ हमारे रब और हर चीज़ के रब ! दाने और गुठली को फाड़ने वाले ! तौरात, इन्ज़ील और फुरकान (कुरआन) के उतारने वाले ! मैं हर उस चीज़ की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ जिसकी पेशानी तू पकड़े हुए है। ऐ अल्लाह ! तू ही अब्वल (सबसे पहले) है, तुझसे पहले कोई चीज़ नहीं। और तू ही आखिर है, तेरे बाद कोई चीज़ नहीं। और तू ही ज़ाहिर है, तेरे ऊपर कोई चीज़ नहीं। और तू ही बातिन है, तुझसे वरे कोई चीज़ नहीं। हमारा कर्ज अदा कर दे और हमें निर्धनता से (निकाल कर) धनवान कर दे।)

3- अली रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उनके पास एक मुकातब (एक गुलाम जो अपने मालिक के साथ दासता से मुक्ति का अनुबंध कर चुका था) आया और उसने कहा : “मैं अपनी मुकातबत की राशि चुकाने में असमर्थ हूँ ; इसलिए मेरी सहायता करें।” उन्होंने कहा : क्या मैं तुम्हें कुछ ऐसे शब्द न सिखाऊँ जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे सिखाए ? अगर तुम पर सीर के पहाड़ जैसा कर्ज होगा तो अल्लाह उसे तुम्हारी ओर से अदा कर देगा। उन्होंने कहा : “कहो : “*اَللّٰهُمَّ كَفِّرْ بِيْ اِسْمِيْ وَرَبِّىْ بِرَبِّكَ الَّذِى كَرَّمَ رَجُلًا مِّنْ رِّجَالِكَ لَمَّا كَانَتْ يَدَاكَ مَبْرُورًا لِّمَنْ يَدُورُ اِلَيْهِ*” (ऐ अल्लाह मुझे हलाल प्रदान करके हराम से काफी हो जा और मुझे अपनी अनुकंपा प्रदान करके अपने सिवा अन्य से बेनियाज़ कर दे।) इसे तिर्मिज़ी (हदीस संख्या : 3563) ने रिवायत किया है और अलबानी ने सहीह अत-तिर्मिज़ी में हसन कहा है।

मुकातबत : दास का अपने स्वामी को धन देने की प्रतिज्ञा करना ताकि वह उसे मुक्त कर दे।

4- तबरानी ने “अल-मो'जम अस-सगीर” में अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि उन्होंने कहा :

की जाएगी जो उसने निर्धारित किए हैं। इसी तरह उसका मुतलक (सामान्य) होना या उसका कोई समय निर्धारित करना, उसकी कैफ़ियत (तरीका) बयान करना, उसकी संख्या निर्धारित करना, उन अज़कार एवं दुआओं, तथा अन्य सभी इबादतों में जो किसी विशिष्ट समय, या संख्या, या स्थान या तरीके से प्रतिबंधित नहीं हैं : हमारे लिए उनमें किसी विशेष तरीके, या समय, या संख्या की पाबंदी करना जायज़ नहीं है। बल्कि हम इसके साथ अल्लाह की मुतलक इबादत करेंगे, जैसा कि वर्णित हुआ है। तथा जो कुछ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथन या कर्म के आधार पर साबित होता है कि वह किसी विशेष समय या संख्या के साथ प्रतिबंधित है, या उसके लिए समय या तरीका निर्धारित किया गया है : हम उसके साथ अल्लाह की इबादत उसी तरह करेंगे जो शरीयत से साबित है।

शैख अब्दुल-अज़ीज़ बिन बाज़, शैख अब्दुर-रज़्ज़ाक अफीफी, शैख अब्दुल्लाह बिन गुदैयान, शैख अब्दुल्लाह बिन कऊद

“मजल्लतुल-बुहूस अल-इस्लामिय्यह” (21/53) और “फतावा इस्लामिय्यह” (4/178) से उद्धरण समाप्त हुआ।

और अल्लाह तआला ही सबसे अधिक ज्ञान रखता है।